परम विनय

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

विनम्रता सद्गुणों की खान है। विनम्रता एक सुन्दर भाव है। विनम्रता के द्वारा मनुष्य बड़ा से बड़ा पद प्राप्त कर सकता है। मनुष्य अपने जीवन का निर्माता स्वयं है। पुरुषार्थ करने में मनुष्य स्वतंत्र है और प्रारब्ध में परतंत्र है। प्रारब्ध को बदला नहीं जा सकता। जैसे–जैसे पिछले जन्म के भाव हैं वही इस जन्म के द्रव्य कर्म बनकर सुख–दुःख प्रदान करते हैं। कार्मण शरीर और आत्मा का सम्बन्ध अनादि अनन्त है। अहंकार ही कार्मण शरीर का निर्माता है। मूल रूप से आत्मा अशरीरी है। आत्मा के कारण ही अस्तित्व है। अपने को कर्ता मानना अहंकार है। मैं केवल निमित्त मात्र हूं। यह सोचना चाहिए। कर्ता अनेक होते हैं इसलिए अपने को कर्ता नहीं मानना चाहिए।

जो विनयशील होता है, जो विनम्रता का जीवन जीता है उसका कोई शत्रु नहीं होता। भगवान महावीर परम विनम्र थे। क्षीण, मोह बनने के बाद स्वयं भगवान बन गये थे। जब प्रवचन देते थे तो चारों गतियों के जीव उनकी वाणी सुनते थे। कुत्ता, बिल्ली, शेर, चूहा, पशु–पक्षी जो एक–दूसरे के शत्रु थे किन्तु उनके प्रवचन में अपना शत्रुता भाव छोड़कर अपनी–अपनी वाणी में प्रवचन सुनते थे। विनयशीलता का भाव सभी प्राणियों में आ जाता था। विनयशीलता भावनात्मक विकास से आती है। विनयशीलता के कारण क्रोध, मान, माया, लोभ समाप्त हो जाता है। यदि आदमी से कोई गलती हो जाये तो उसे विनम्र भाव से स्वीकार करना चाहिए। मानव बुराइयों का पुतला है। बुराइयों को अच्छाइयों से जीतना चाहिए। सभी जीवों को आत्मवत् मानना चाहिए।

भगवान् श्रीरामचन्द्र और लंकापति रावण का दृष्टान्त इस संबंध में विचारणीय है। जब भगवान् राम और रावण की सेनाएं आमने–सामने आकर के खड़ी हुई तो भगवान् राम पैदल, बिना अस्त्र–शस्त्र के भालू–बन्दरों की सेना के साथ खड़े थे। दूसरी तरफ रावण रथ पर सवार और

चतुरंगिणी सेना के साथ अहंकार से युक्त युद्ध क्षेत्र में भगवान् राम को ललकार रहा था। यह युद्ध विनम्रता और अहंकार के बीच युद्ध था, जिसमें विनम्रता विजयी हुई और अहंकार पराजित हुआ। विनम्रता का गुण शिक्षा, विद्या और दूसरों को सम्मान देने से प्राप्त होता है।

विद्या को प्राप्त करने के बाद भी यदि विनम्रता नहीं आई तो समझना चाहिए कि विद्या का वास्तविक मूल्य अभी नहीं प्राप्त हुआ। जिस समय वृक्ष में फल आता है तो वृक्ष की शाखाएं नम जाती है। इसी प्रकार विद्या और विनय से सम्पन्न व्यक्ति नम्र बन जाता है। परन्तु कुछ लोग ऐसे है कि विद्या की प्राप्ति के बाद भी उनमें नम्रता न आकर अहंकार आ जाता है और यह अहंकार उनके विनाश का कारण होता है। वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत और आगमों में यही बताया गया है कि मानव को विनयशील होना चाहिए।

जिस समय रावण मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ था उस समय भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा कि रावण बहुत ज्ञानी है। उसके पास जाकर कुछ ज्ञान की शिक्षा लीजिए। लक्ष्मणजी जब अपने बड़े भाई की बात स्वीकार कर रावण के पास गये और उसके सिर के पास खड़े होकर ज्ञान प्राप्त करना चाहा तो रावण ने अपनी आंखे ही नहीं खोली। लक्ष्मणजी निराश होकर लौट आये और भगवान् राम को पूरा वृतान्त बता दिया। तब भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए विनम्रता आवश्यक है। पुनः जाकर रावण के पैर के पास खड़े होकर ज्ञान की याचना करना। लक्ष्मणजी जब रावण के पास गये और उसके पैर के पास खड़े हुए तो रावण ने लक्ष्मण को अनेक विद्याओं का ज्ञान दिया।

इस प्रकार विनम्रता जीवन के हर पड़ाव पर काम आती है। विनम्रता से जुड़ाव होता है और अहंकार से बिखराव। एक परिवार में अनेक सदस्य पारस्परिक सौहार्द्र के साथ रहते है। इसका मुख्य कारण है कि बड़े लोग छोटों को स्नेह देते है और छोटे लोग बड़ों को आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते है। इससे पारस्परिकता बनी रहती है, एक दूसरे का प्रेम और स्नेह परिवार के सभी सदस्यों को मिलता रहता है, जिससे परिवार में एकजुटता बनी रहती है और परिवार उन्नति करता है, परिवार में बिखराव नहीं आता। यही बात समाज और राष्ट्र के संबंध में भी विचारणीय है। समाज में जहां हित चिंतन की बात हो समाज के हर सदस्य को

इसके लिए मिलजुलकर कार्य करना चाहिए। विकास के किसी काम में समाज के हर व्यक्ति को मिलकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। राष्ट्र के संबंध में भी यह विचारणीय है।

राष्ट्र को आंतरिक और बाह्य दोनों दृष्टियों से संबंध बनाकर आगे बढ़ना चाहिए। राष्ट्राध्यक्ष का कर्त्तव्य होता है कि वह विश्व के अनेक देशों के साथ मित्रता का व्यवहार करें, पड़ोसी देशों के साथ सहअस्तित्व और भाईचारे का संबंध होना चाहिए। जिससे देश को बाह्य खतरों से सुरक्षा मिल सके। राष्ट्र के अंदर अनेक जातियों के लोग, अनेक धर्मों के लोग और अनेक सम्प्रदायों के लोग रहते है। सभी का यह कर्त्तव्य है कि वे एक–दूसरे के साथ मिलजुलकर के रहे, जिससे उनके बीच किसी प्रकार का मनमोटाव न हो। विनम्रता से अहंकार नष्ट हो जाता है और स्व और पर का भेद मिट जाता है। क्रोध, मान, माया और लोभ का सर्वथा विनाश हो जाता है।